

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान
सैक्टर-8, द्वारका, नई दिल्ली-110077



icmr | **NIMR**
INDIAN COUNCIL OF
MEDICAL RESEARCH | NATIONAL INSTITUTE OF
MALARIA RESEARCH

राजभाषा ई-पत्रिका
अर्धवार्षिक (जुलाई-दिसम्बर 2025)
अंक-9, वर्ष-2025

राजभाषा ई-पत्रिका

अंक-9, वर्ष - 2025

	विषय सूची	पृष्ठ सं.
संरक्षक डॉ. अनुप अन्वीकर निदेशक	1. संरक्षक की कलम से	
	2. पुरस्कृत निबंध	03
	3. संस्थान की गतिविधियां	
संपादक डॉ. वंदना शर्मा उपनिदेशक (राजभाषा)	• संस्थान एवं क्षेत्रीय इकाईयों में हिन्दी दिवस माह	13
	• संस्थान का वार्षिकोत्सव	22
	• संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम	26
	• संस्थान में स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान	30
संपादक मंडल प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती मीनाक्षी भसीन श्री रघुबर दत्त	• आईसीएमआर-शाईन एनिशिएटिव का आयोजन	31
	• राष्ट्रीय खेल दिवस	34
	• सतर्कता दिवस	36
	• उत्कृष्ट स्लोगन	37
	4. संस्थान में सेवा-निवृत्त एवं नई नियुक्तियां	38-39

राजभाषा ई-पत्रिका में प्रकाशित लेखों से पत्रिका के उल्लेखित सदस्यों की सहमति/असहमति होना अनिवार्य नहीं है, इसके लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।


संरक्षक की कलम से :-



यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हम राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की राजभाषा ई-पत्रिका का नवीनतम अंक-9, जुलाई-दिसम्बर 2025 आपके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। अभिव्यक्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। अभिव्यक्ति के लिए मातृ भाषा से बेहतर और कोई माध्यम नहीं हो सकता है। राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करना हमारा संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व है और संस्थान द्वारा राजभाषा विभाग द्वारा प्रदत्त निदेशों के अधीन विभिन्न नवाचारी प्रयास समय-समय पर किए जा रहे हैं। राजभाषा ई-पत्रिका भी इन्हीं प्रयासों का प्रतिफल है जो राजभाषा के उन्नयन एवं संस्थान में इसके प्रयोग हेतु वातावरण बनाने में अहम भूमिका निभा रही है। आज के डिजिटल युग में हिंदी की भूमिका पहले से कहीं अधिक व्यापक हो गई है। तकनीकी विकास के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए हिंदी अब विभिन्न पोर्टलों तथा प्रस्तुतीकरणों की प्रभावी भाषा के रूप में उभर रही है। इसी दिशा में, पत्रिका का ई-प्रकाशन सरकार के डिजिटल इंडिया की ओर बढ़ते कदमों में भी सहायक कहा जा सकता है, यानि एक पंथ दो काज।

प्रत्येक छःमाही में प्रस्तुत पत्रिका का अंक संस्थान की राजभाषा संबंधी प्रगति का एक आईना है जो कि संस्थान विज्ञान के साथ-साथ राजभाषा हिंदी को भी प्रगति के पथ पर अग्रसर करते हुए उसका उचित दर्जा दिलाने हेतु प्रयासरत है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस अंक में हमने हिंदी दिवस माह के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिताओं के प्रथम पुरस्कृत निबंधों को दिया है और इस वर्ष भी उत्कृष्ट स्लोगन प्रतियोगिता की विजेता प्रविष्टियों को भी स्थान दिया है। इसके साथ ही, संस्थान द्वारा नराकास के सदस्य कार्यालयों हेतु आयोजित निबंध प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कृत निबंध भी पत्रिका में शामिल किया गया है। पत्रिका के इस अंक को हमने संस्थान में होने वाली गतिविधियों का केन्द्र बिंदु बनाते हुए इसका विस्तृत उल्लेख किया है अर्थात “संस्थान की गतिविधियां” शीर्षक के अंतर्गत इस छःमाही के दौरान होने वाली संस्थान की समग्र गतिविधियों को शामिल करने का प्रयास किया गया है, जिसके अंतर्गत हिंदी दिवस माह, संस्थान का वार्षिकोत्सव, प्रशिक्षण कार्यक्रम, संस्थान में आयोजित स्वस्थ नारी-सशक्त परिवार का आयोजन, संस्थान में आईसीएमआर-शाईन इनिशिएटिव 2025 का आयोजन, राष्ट्रीय खेल दिवस, सतर्कता दिवस संबंधी गतिविधियों को स्थान दिया गया है। ई-पत्रिका के अंत में इस छःमाही में संस्थान से सेवा-निवृत्त एवं नव-नियुक्त कर्मियों को शुभकामनाएं देते हुए उनकी जानकारी प्रस्तुत की गई है।

आशा है कि राजभाषा ई-पत्रिका के इस अंक में दी गई जानकारियां सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। इस संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव सादर आमंत्रित हैं। आपके द्वारा भेजे गए विचारों एवं सुझावों के लिए हम सदा आपके आभारी रहेंगे। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं हमारे लिए प्रेरणा का कार्य करेंगी और आपके व हमारे बीच विचार-संप्रेषण का माध्यम बनेंगी।


डॉ. अनुप अन्वीकर

हिन्दी दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी) में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- “प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग : पर्यावरण के लिए खतरा”

(डॉ. तरुण वत्स, वैज्ञानिक-सी)

प्रकृति ने हमें एक सुंदर पर्यावरण प्रदान किया है जिसमें सभी जीव-जन्तु साथ में जीवन व्यतीत करते हैं। यह हमारा पर्यावरण जो कि शुद्ध वायु, जल, पेड़-पौधों से भरा है। इसमें मनुष्य द्वारा बहुत से ऐसे उत्पाद हैं जो कि इसे प्रदूषित करते हैं। इनमें से ही मनुष्य द्वारा निर्माण किया गया एक उत्पादक है “प्लास्टिक”। प्लास्टिक का उत्पादन 1900 के दशक में शुरू हुआ और 1950 तक इसका उत्पादन कई बिलियन टन तक पहुंच गया और 2025 में इसका उत्पादन इतना बढ़ गया है कि आज आपको घर-घर में प्लास्टिक का सामान देखने को मिलेगा। प्लास्टिक के सामान में बच्चों के खिलौने, थैले, पेन, अलमारी, कुर्सी, मेज, किचन आदि के सामान मिलेंगे।

प्लास्टिक का पर्यावरण पर प्रभाव

- 1. वातावरण पर प्रभाव :-** प्लास्टिक एक नॉन बायोडिग्रेडेबल पर्याय है जो कभी नष्ट नहीं होता अपितु इसे जलाने पर भी कार्बन-डाई-आक्साईड एवं अन्य जहरीली गैस निकलती है जो कि पर्यावरण के लिए एक बहुत बड़ा खतरा है। प्लास्टिक कभी गलता नहीं है एवं बार-बार उपयोग करने के बाद इसकी गुणवत्ता भी खराब हो जाती है। प्लास्टिक को जलाने से हमारे पर्यावरण में उपस्थित शुद्ध हवा दूषित होती है जिसका असर जीव-जन्तुओं पर दिखता है। यह दूषित हवा हमारे शरीर में प्रवेश करती है और इससे हमारे अंगों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। आज हम देखते हैं कि बहुत से पक्षी विलुप्त हो गए हैं। इसका एक मुख्य कारण प्लास्टिक द्वारा पर्यावरण को दूषित करना है।
- 2. मनुष्य एवं अन्य जीव-जन्तुओं पर प्रभाव :-** प्लास्टिक का उपयोग न केवल मनुष्य अपितु जीव-जन्तुओं के लिए भी जानलेवा है। आजकल मनुष्य प्लास्टिक की थैलियों में खाना पैक करता है, प्लास्टिक की कुर्सी, मेज एवं अन्य सामान उपयोग करता है। बार-बार प्लास्टिक के सामान को उपयोग करने से उसकी गुणवत्ता खराब होती है और इसके नैनो कण हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। प्लास्टिक के नैनो कण हमारे फेफड़ों, गुर्दा व अन्य अंगों के लिए हानिकारक होते हैं तथा इससे कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां भी होती हैं। एक सर्वे के अनुसार वर्ष 2050 तक पृथ्वी के सभी प्राणी व जीव-जन्तुओं में प्लास्टिक उनके शरीर में पहुंच चुका होगा और इसके दुष्प्रभाव भी दिखने शुरू हो जाएंगे।

इसलिए हमें आज से ही अपने जीवन में प्लास्टिक का प्रयोग कम कर देना चाहिए। प्लास्टिक की बोतल में न पानी पीकर हमें तांबे की बोतल उपयोग करनी चाहिए। प्लास्टिक के डिब्बे में न खाना पैक करना चाहिए, प्लास्टिक के थैलों की जगह कपड़े से बने थैलों का उपयोग करना चाहिए, प्लास्टिक के गिलास, पाइप जो कि सिर्फ एक बार ही इस्तेमाल होते हैं। इनका उपयोग कम से कम करना चाहिए। प्लास्टिक से जुड़ी चीजों का कम से कम उपयोग करना चाहिए। गाय, कुत्ते, बिल्ली आदि कचरे के ढेर में खाने की तलाश में बहुत

बार प्लास्टिक खा जाते हैं, जिससे इनकी मौत तक हो जाती है। इसका मुख्य कारण है “मनुष्य” एवं मनुष्य द्वारा बनाई गई प्लास्टिक एवं इसका अपनी जीवन शैली में प्रयोग किया जाना है।

3. **जल पर प्रभाव :-** प्लास्टिक का एक बहुत बड़ा भाग हम ऐसे ही जल में फेंक देते हैं और धीरे-धीरे ये जल में एकत्रित होता रहता है। आज बड़े-बड़े महासागर, नदियों एवं झीलों में प्लास्टिक के भंडार जमा हो चुके हैं, जिससे न केवल वहां का पानी दूषित हो रहा है बल्कि पानी में रह रहे जीव, पक्षी आदि भी मर रहे हैं। सन् 2050 तक महासागर में उपस्थित सभी जीवों के शरीर में प्लास्टिक प्रवेश कर चुका होगा और वे सभी एक-एक करके मरने लगेंगे। इससे हमारे पर्यावरण को बहुत बड़ा खतरा है। महासागर, नदियां और झीलें प्रदूषित होंगी तथा नदियों का पानी इस्तेमाल करने योग्य नहीं रहेगा। नदियों एवं झीलों में रह रही मछलियां एवं अन्य जीव-जन्तु माइक्रों प्लास्टिक को खा लेगी और वे मनुष्य के अन्दर भी आ जाएंगी, जब मनुष्य मछलियों एवं अन्य को खाएगा। इससे न केवल जल में रह रहे जीव-जन्तु अपितु मनुष्य की जान के लिए भी खतरा है।
4. **मिट्टी पर प्रभाव :-** आज बहुत बड़ी मात्रा में प्लास्टिक को जमीन के नीचे दबाया जा रहा है। इससे मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो रही है। मिट्टी की गुणवत्ता खराब होने के कारण जमीन के नीचे का पानी दूषित हो रहा है और इसका प्रभाव मनुष्य के शरीर पर पड़ रहा है। मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो जाने से फसलें भी नहीं उगाई जा सकेंगी, जिससे हमारी जमीन पर उत्पादन भी कम हो जाएगा। इसलिए हमें प्लास्टिक को मिट्टी के नीचे नहीं दबाना चाहिए।

निवारण

प्लास्टिक न केवल मनुष्य के लिए बल्कि पूरे पृथ्वी के जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों एवं पक्षियों के लिए एक खतरा बन चुका है। अर्थात् प्लास्टिक के उत्पादन से बन रहे खतरों का मनुष्य द्वारा निवारण करना होगा।

1. **उत्पादन में कमी करना :-** चाइना विश्व में प्लास्टिक का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। चाइना अपने फायदे के लिए प्लास्टिक के उत्पादन को बढ़ाता है और उसे विश्वभर में निर्यात करता है। प्लास्टिक की गुणवत्ता एवं सस्ते होने के कारण विश्व के लोग इसे उपयोग करते हैं। परंतु हम जानते हैं कि प्लास्टिक हमारे पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक है। इसलिए हमें इसका उत्पादन कम करना होगा और प्लास्टिक की जगह हमें अन्य चीजें उपयोग करनी होंगी जैसे ताँबे की बोतल, कपड़े के बैग आदि।
2. **बार-बार उपयोग करना :-** हमें प्लास्टिक को बार-बार उपयोग में लाना होगा। एक बार अगर प्लास्टिक से बनी वस्तु टूट जाती है तो हमें उसे प्लास्टिक को मशीनों द्वारा फिर से उपयोग में लाना चाहिए। इससे प्लास्टिक का उत्पादन कम होगा।
3. **निर्भरता कम करना :-** हमें प्लास्टिक पर निर्भरता कम करनी होगी। हमें प्लास्टिक के स्थान पर अन्य मजबूत, अच्छे एवं सस्ते विकल्प लाने होंगे, जिससे मनुष्य की प्लास्टिक पर निर्भरता कम हो और प्लास्टिक

से हम अपने पर्यावरण को दूषित होने से बचा सकें। जैसे क) प्लास्टिक से बने खिलौनों की जगह लकड़ी से बने खिलौने, ख) प्लास्टिक से बनी बोतलों की जगह पीतल की बोतलें, ग) प्लास्टिक से बने थैलों की जगह कपड़े से बने थैले आदि।

4. प्लास्टिक मुक्त भारत :- “2 अक्टूबर 2019” गांधी जयंती के दिन देश में प्लास्टिक मुक्त भारत की नींव रखी गई थी, जिसके अंतर्गत प्लास्टिक से बनी चीजों का उपयोग कर से कम और कुछ चीजों को बैन कर दिया गया। यह भारत द्वारा एक अच्छी पहल है जिससे भारत एक प्लास्टिक मुक्त भारत बन पाएगा। हमें शपथ लेनी होगी कि हमें प्लास्टिक का उपयोग धीरे-धीरे बंद करना होगा, जिससे हम अपने पर्यावरण को प्लास्टिक के दुष्प्रभाव से बचा सकें। हमें विश्व को प्लास्टिक से मुक्त करना होगा ताकि हमारी ये सुंदर पृथ्वी ऐसी ही हरी-भरी रहे। इस पर सभी जीव-जन्तु अपना जीवन खुशी-खुशी व्यतीत कर सकें।

हिन्दी दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी) में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- “प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग : पर्यावरण के लिए खतरा”

(श्री अभिषेक, एल.ए.-1)

**“एतां दृष्टमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्ध्यः
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः”।।**

श्रीमद् भगवत गीता के इस श्लोक में मानव द्वारा अविवेकपूर्ण कर्मों से संसार पर विनाशकारी प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है।

मनुष्य ने विगत शताब्दियों में अनेक नवनिर्माण किए हैं। वर्ष 1907 में खोजे गए बेकलाइट, जो प्लास्टिक का एक रूप है और उसके बाद पालिइथिलीन पदार्थों ने मानव जीवन को सुगम एवं सरल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कम कीमत, रोगाणुरहित, सुविधाजनक, सस्ता, हल्केपन एवं टिकाऊ विशेषताओं के कारण प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग विभिन्न उद्योगों से लेकर दैनिक गतिविधियों में होने लगा है। प्लास्टिक उत्पाद, निर्माण, संरचना एवं रख-रखाव, खाद्य, सुरक्षा, जल, स्वास्थ्य एवं अन्य मानव जीवनोपयोगी वस्तुओं में व्यापक रूप से प्रयोग किए जाते हैं। अभी तक लगभग 8.3 अरब मेट्रिक टन प्लास्टिक का उत्पादन किया जा चुका है जिसमें वर्ष 2016 में केवल 33 करोड़ टन प्लास्टिक उत्पादन हुआ था जो 8300 गुना वृद्धि है। इसमें से लगभग 6.3 अरब मेट्रिक टन अब तक कचरे के रूप में परिवर्तित हो गया है। स्टेटिस्टा 2021 के प्रतिवेदन के अनुसार प्लास्टिक का विश्व बाजार लगभग 563 अरब डालर का है।

प्लास्टिक ने जहां मानव जीवन को सुगम बनाया है वहीं यह एक चुनौती भी बन गया है। इसका विघटन जैविक पदार्थों की तुलना में 500-1000 वर्ष में होता है। इसकी भयावहता का सबसे बड़ा प्रभाग महान प्रशांतीय कचरा क्षेत्र है जो भारत के 5-6 बड़े राज्यों जिसमें महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश एवं कर्नाटक जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 16 लाख वर्ग किलोमीटर के फैलाव के बराबर है। प्लास्टिक का उत्पादन करने में विश्व के पेट्रोलियम तेल का लगभग 6 प्रतिशत हिस्सा खर्च होता है और यह अगले 20 वर्षों में 20गुना अधिक बढ़ जाएगा। इसके उत्पादन में जीवाश्म ईंधन और प्राकृतिक गैस भी लगती है जो विश्व का लगभग 9 प्रतिशत है। इससे कार्बन-डाई-आक्साइड जैसी हरित गृह गैसों का उत्सर्जन होता है, जिससे पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन होता है।

इसी गति से अगर प्लास्टिक का उत्पादन जारी रहा तो अगले कुछ वर्षों में विगत शताब्दी के बराबर प्लास्टिक का उत्पादन कर लिया जाएगा। इसके प्रकारों में मुख्यतः बड़े जाल, विस्तारित प्लास्टिक, सूक्ष्मप्लास्टिक आदि आते हैं। विश्व के लगभग 40 प्रतिशत प्लास्टिक का उपयोग भंडारण, रख-रखाव, परिवहन, जैविक, रासायनिक एवं भौतिक सुरक्षा हेतु किया जाता है। परन्तु यह उपयोग के बाद भूमि, कचरा स्थलों, नदियों और उनके द्वारा महासागरों में

प्रवेश करता है। अनुमानानुसार, वर्तमान समय में लगभग 80 लाख टन कचरा समुद्रों में प्रवेश करता है जो अगले 20 वर्षों में दोगुना हो जाएगा।

महासागरों में विघटन प्रक्रिया जिसमें गर्मी, धूप (पैराबैंगनी किरणें) एवं जल के कारण प्लास्टिक के सूक्ष्म कण सतह पर फैल जाते हैं और समुद्री धाराओं द्वारा हजारों किलोमीटर तक पहुंच जाते हैं। आज के समय में लगभग 51 ट्रिलियन कण महासागरों में विद्यमान हैं। यह कण पृथ्वी के अनैतिक चक्रों द्वारा भूमि, वायु और अन्य जल स्रोतों से जीव जन्तुओं के शरीर में प्रवेश करते हैं। वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि वर्ष 2015 तक लगभग 90 प्रतिशत समुद्री पक्षियों में सूक्ष्म प्लास्टिक कण पाए गए हैं। विश्वभर में 2000 से अधिक जीव-जन्तुओं की प्रजातियों में प्लास्टिक किसी न किसी रूप में पाया गया है। इससे 1 लाख के अधिक जीव भोजन और आवास के नष्ट होने एवं फँसने के कारण मारे जाते हैं।

पर्यावरण क्षरण भूमि, नदियों और महासागरों के प्राकृतिक परिदृश्य में होने वाले बदलावों को दिखाता है। जैव विविधता, सूक्ष्म कणों का प्रसार, उद्योगों और कृषि उत्पादन में गिरावट, समुद्री मलबा, खाद्य श्रृंखला में उपस्थित आदि पैमानों का सटीक मापन एवं गहन विश्लेषण क्षरण को प्रस्तुत करते हैं। अन्य कारणों में औद्योगिक प्रक्रियाओं का विकास जिसमें उत्पादन क्षमता में बढ़त, अत्यधिक उपभोक्तावाद, कचरा निपटान प्रणाली में कमजोरी, कृत्रिम उत्पादों का भंडारण, अयोग्य वस्तुओं का संग्रहण, सूक्ष्मकणों के उत्पादों, रख-रखाव में कमी, जागरूकता और शिक्षा में उदासीनता प्लास्टिक प्रदूषण फैलाते हैं। विकसित देशों द्वारा कचरा विकासशील देशों में स्थानांतरित किया जाता है जहाँ कचरा प्रबंधन के बुनियादी ढांचे न होने से समस्या गंभीर हो जाती है। विकसित देशों में प्रति व्यक्ति कचरा उत्पादन 130 किलो है जबकि विश्व का प्रति औसत व्यक्ति उत्पादन 28 किलो है। यह आर्थिक एवं सामाजिक असमानताओं को बढ़ाने वाले कारण बनते हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण केवल पर्यावरण ही नहीं, अपितु मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर डालता है। एक शोध के अनुसार हर 10 में से 8 बच्चों में और सभी व्यस्कों में सूक्ष्म प्लास्टिक (5 मिलीमीटर से कम आकार वाले) पाए गए हैं। 90 प्रतिशत व्यस्कों में विस्फेनाल-ए पेशाब में पाया गया। विस्फेनाल-ए स्टाइरीन एवं फेथलेटस जो प्लास्टिक के रासायन हैं, उनकी उपस्थिति से कैंसर एवं हार्मोन में बदलाव जैसी विषम बीमारियां पैदा होती हैं। कचरा प्रबंधन में जहरीली गैसों से श्वास प्रणाली, प्रतिरक्षा प्रणाली में बदलाव आते हैं जिससे शारीरिक क्षमताओं, प्रजनन, मासपेशियों पर बुरा असर होता है। पृथ्वी पर जीवनचक्र जैविक और अजैविक पदार्थ से मिलकर चलता है। इसमें प्लास्टिक जैसे जहरीले पदार्थ शामिल नहीं होने चाहिए। परंतु अभी प्लास्टिक पर पूर्ण रोकथाम संभव नहीं है। इसका कारण प्लास्टिक उत्पादों पर निर्भरता और अन्य उपलब्ध विकल्पों के उत्पादन में लगने वाले समय, उर्जा, कीमत तथा हरितगृह गैसों का अधिक उत्सर्जन है। इसका एक उदाहरण कपास के थैले उत्पादन से समझा जा सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने “प्लास्टिक एक स्वास्थ्य पहल” के अंतर्गत चेतावनी दी है कि प्लास्टिक उत्पादन, उपयोग, पुनर्चक्रण और निस्तारण के सभी चरणों में स्वास्थ्य के लिए खतरा है। विश्व आर्थिक मंच 2016 के प्रतिवेदनानुसार विश्व के कुल प्लास्टिक का केवल 9 प्रतिशत हिस्सा ही पुनः चक्रित किया जाता है 12 प्रतिशत जलाया जाता है और शेष 79 प्रतिशत भूमि, नदियों और महासागरों में डाला जाता है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (जो 38

देशों का समूह है) ने गंभीर चेतावनी दी है कि विश्व में 2060 तक कुल प्लास्टिक कचरा तीन गुना बढ़ जाएगा, जिसमें से आधा कचरा स्थलों में होगा और केवल एक चौथाई से कम ही पुनः चक्रित होगा। अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संरक्षण संघ ने भी इस बात पर जोर दिया है कि हर वर्ष लगभग 2 करोड़ टन प्लास्टिक कचरा उत्पादित होता है और वर्ष 2040 तक इसका उत्पादन दोगुना होने की संभावना है। ट्रिथिया फरेली, न्यूजीलैंड की सामाजिक मनोविज्ञानिक जो प्रभावी प्लास्टिक संधि के वैज्ञानिक संगठन की समन्वयक हैं, ने कहा है कि “प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक संकट है और इसके समाधान के लिए एक प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय संधि की आवश्यकता है”।

पर्यावरण क्षरण को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा ने सन् 2019 में एक प्रस्ताव को अपनाया है जिसमें महासागरीय कचरा और सूक्ष्म प्लास्टिक के कचरे को कम करने हेतु हर देश को कदम उठाने के लिए कहा गया है। साथ में, सन् 2022 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा ने एक अंतर्राष्ट्रीय संधि को वर्ष 2025 तक लागू करने हेतु सभी देशों के बीच सहमति करवाने के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य किया है। भारत ने भी इस दिशा में कदम उठाते हुए सन् 2022 में एकल उपयोग प्लास्टिक के 19 उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। ओशन क्लीनअप एवं स्वच्छ समुद्रों जैसी पहलों पर भी संयुक्त राष्ट्र ने जोर देना शुरू कर दिया है। बेसल, रोटस्टेम एवं स्टाकहाम कन्वेंशन द्वारा पार-सीमा कचरा स्थानांतरण को भी रोका गया है। नव उद्योग जो कचरा प्रबंधन के ढांचे विकसित करने में योगदान दे सकते हैं, उनके लिए सरकारें छूट का प्रावधान करती हैं। इससे रोजगार के लाखों अवसर पर उत्पन्न किए जाते हैं। नवोन्मेषी समाधान जैसे अनुसंधान द्वारा जैव विघटन तथा सूक्ष्म जीव (एंजाइम एवं बैक्टीरिया) द्वारा कचरा कम करने की प्रक्रियाओं में भी सफलताएं मिली हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण से लड़ने के लिए उत्पादन खपत पर नियंत्रण, पुनर्चक्रण, नवाचार, व्यवहार परिवर्तन, नागरिकों की भूमिका एवं कचरा निपटान प्रणाली को सक्षम बनाना आवश्यक है। साथ ही वैश्विक, देशीय, स्थानीय और व्यक्तिगत स्तरों पर सरकार, समुदाय एवं संस्थानों में प्रतिबद्धता, समन्वय भी जरूरी है। अंततः भारत के महान कवि रविन्द्रनाथ टैगोर के इस वाक्य को यह विषय चरितार्थ करता है। “प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने से पहले हमें उसके महत्व को समझना चाहिए”।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दक्षिणी दिल्ली के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों हेतु संस्थान द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता 2025 में प्रथम पुरस्कृत निबंध

विषय :- “कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग और राजभाषा”

(सुश्री शांति मैथ्यू, वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बसईदारापुर, दिल्ली)

रूपरेखा: प्रस्तावना, कृत्रिम बुद्धिमता एवं राजभाषा की परिभाषा कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग घटक प्रकार, ऐप, सरकारी योजना, लाभ, हानि, उपसंहार।

प्रस्तावना :-

कृत्रिम बुद्धिमता के जनक जॉन मैकार्थी को माना जाता है। सन् 1955 में जान मैकार्थी ने कृत्रिम बुद्धिमता को विज्ञान और कम्प्यूटर द्वारा मशीनों में बुद्धिमता प्राप्त करने को कहा है। उनके अनुसार कृत्रिम बुद्धिमता कम्प्यूटर विज्ञान की शाखा है, जो स्वतः कार्य करने एवं समस्या का समाधान करने में सक्षम है। दूसरे शब्दों में यह एक ऐसी तकनीक है जो मशीनों में मानव जैसी बुद्धि द्वारा काम करती है, जो समस्या का समाधान और निर्णय लेने में सक्षम है। भारत में कृत्रिम बुद्धिमता के जनक डॉ. राज रेड्डी हैं। कृत्रिम बुद्धिमता और राजभाषा का परस्पर संबंध बताने से पहले आइए हम जानते हैं कि राजभाषा क्या है? भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और इसी दिन को हिंदी दिवस के रूप में मानते हैं।

राजभाषा की परिभाषा :- किसी भी प्रदेश की केन्द्र सरकार द्वारा उस प्रदेश के प्रशासनिक कार्यों को करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग होता है उसे राजभाषा कहते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग:-

हिंदी के क्षेत्र में : कृत्रिम बुद्धिमता का हिंदी भाषा के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। भाषा, अनुवाद, भाषा संशोधन, भाषा विश्लेषण, भाषा सिंथेसिस सबका कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा विकास किया जा सकता है। **स्वास्थ्य :** चिकित्सा विश्लेषण और रोगों के उपचार एवं निदान में विशेष योगदान है। **वित्त :** कृत्रिम बुद्धिमता की वित्तीय विश्लेषण एवं दुर्लभ प्रबन्धनों में अग्रिम भूमिका है। **परिवहन :** कृत्रिम बुद्धिमता स्वायत्त वाहनों और यातायात प्रबंधनों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। **स्कूली पाठ्यक्रमों :** कृत्रिम बुद्धिमता की स्कूली पाठ्यक्रमों में अग्रिम भूमिका है।

पायथन:- पायथन कृत्रिम बुद्धिमता के लिए एक प्रोग्रामिक भाषा है। यह डेटा विश्लेषण, मशीन लार्निंग वेबएप, डेस्कटाप नेटवर्किंग एप आदि में बहुतायत से उपयोग में आने वाली प्रोग्रामिंग भाषा है।

चैट जीपीटी :- चैट का अर्थ है बातचीत करना और जीपीटी का अर्थ है 'जेनेरेटिंग प्री ट्रेण्ड टान्सफोर्मर'। यह एक कृत्रिम बुद्धिमता पर आधारित "चैटवाट्स" है। ओपन एआई द्वारा इसे विकसित किया गया है। ओपन एआई एलन मस्क और सैम आल्टेमेन द्वारा प्रवर्तित एक कम्पनी है। सेन फ्रांसिस्को स्थित यह कंपनी वर्ष 2015 से कृत्रिम

बुद्धिमता के विकास के लिए कार्य कर रही है। चैटवाट्स द्वारा प्राप्त प्रश्न का उत्तर संक्षिप्त तो होगा पर सही दिशा में होगा।

कृत्रिम बुद्धिमता के घटक:-

- 1) सीखना, 2) तर्क करना, 3) समस्या का समाधान, 4) बोध, 5) भाषा का प्रयोग।

कृत्रिम बुद्धिमता के प्रकार:-

1. **प्रतिक्रियाशील मशीनें** :- ऐसी कोई मेमोरी नहीं होती। एक इनपुट हमेशा एक ही आउटपुट देता है।
2. **सीमित मेमोरी वाली मशीनें** :- इसमें मेमोरी सीमित होती है, उदाहरण के तौर पर स्वचालित कारें।
3. **मन का सिद्धान्त**
4. **आत्म जागरूकता** :- इन 3 और दोनों बिंदुओं का अभी वास्तविक दुनिया में कोई उदाहरण नहीं है पर भविष्य में इनके आने की कल्पना की जा सकती है।

कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा विकसित ऐप:

1. **भाषा संगम** : 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत भारत के शिक्षा मंत्रालय द्वारा विभिन्न भाषाओं को सीखने, समझने एवं संचार के लिए मोबाइल पर भाषा संगम नामक एप विकसित किया गया है। इस ऐप का मुख्य उद्देश्य शब्दों, अर्थों, उच्चारण, अनुवाद व्याकरण आदि के बारे में विस्तृत जानकारी देना है। भाषा संगम ऐप द्वारा आप समृद्ध भारत की संस्कृति के द्वार किसी भी भाषा को खोल सकते हैं और समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के बारे में जान सकते हैं।
2. **लीला राजभाषा** : लीला राजभाषा कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा प्रयोग में किए जाने वाला ऐप है। लीला (लर्न इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस) द्वारा किसी भी भाषा के बारे में जान सकते हैं।
3. **कोरटाना** : माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी द्वारा प्रवर्तित यह एक भाषा उपकरण है, जिसके माध्यम से विभिन्न भाषाओं के बीच संचार संभव है। इस उपकरण की मदद से हिंदी में ही नहीं अपितु बंगला, उर्दू और तमिल आदि भाषा में अनुवाद कर सकते हैं।
4. **गूगल असिस्टेंट** : स्मार्टफोनों में कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा दिया गया वरदान गूगल असिस्टेंट है जिसका हम जितना ज्यादा इस्तेमाल करते हैं वह हमें तकनीकी तौर पर और मजबूत बनाती है। दिव्यांग लोगों के लिए माइक्रोसॉफ्ट कंपनी द्वारा अनेक प्रकार से सहायता की गई है जो कि शारीरिक बाधा के बावजूद मशीनों और कंप्यूटरों में कार्य कर रहे हैं और शिक्षा व्यापार विपणन व्यवसाय आदि क्षेत्रों में कुशलतापूर्वक कार्य करके अपनी आजीविका चला रहे हैं।

सरकार की योजनाएं :- हिंदी भाषा और अन्य भाषा के क्षेत्र में:

1. **हिंदी भाषा मॉडल** : कृत्रिम बुद्धिमता के आधार पर मॉडल तैयार कर हिंदी के पाठ को सरल और सार्वजनिक बना रहे हैं।
2. **भाषा अनुवाद** : सरकार कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा अनुवाद सटीकता और पर्याप्त गति लाने की कोशिश कर रही है। उसके लिए बड़े हिंदी भाषा मॉडल भी तैयार कर रही है।

3. **भाषा संसाधनों का विकास** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता भाषा संसाधनों का विकास कर रही है जैसे शब्दकोश, व्यावयांशावली और व्याकरण नियम आदि। इससे विभिन्न भाषाओं को सीखने एवं समझने में सरलता होगी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लाभ :

1. **ग्राहक सेवा में सुधार** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता ग्राहक सेवा में सुधार कर रही है जैसे चैटवाट्स का प्रयोग।
2. **निर्णय लेने में सुधार** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता डेटा विश्लेषण कर निर्णय लेने में सुधार करती है।
3. **नवाचार** : यह उत्पादों और सेवाओं को बढ़ाने में मददगार है।
4. **उत्पादकता में वृद्धि** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता कार्य को स्वचालित कर उत्पादकता में वृद्धि करती है।
5. **लागत में कमी** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कर लागत में कमी की जा सकती है। उदाहरण के लिए स्वचालित प्रक्रियाओं का प्रयोग।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से हानि :

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा सरल प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थता होती है तथा हम उससे बातचीत भी कर सकते हैं, परन्तु शब्दों की प्रचुर मात्रा का समावेश न होने के कारण बड़े संदर्भ में वह शब्दों की व्याख्या नहीं कर सकती है।
2. माइक्रोसॉफ्ट कंपनी के संस्थापक बिलगेट्स के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता सरल कार्यों को करने के लिए मनुष्य की जगह ले सकती है। इनके अनुसार यह बेरोजगारी को बढ़ावा देगा, क्योंकि मशीन द्वारा स्वतः कार्य करने के कारण वहां मनुष्य की जरूरत नहीं होगी तो स्वतः ही बेरोजगारी बढ़ेगी।
3. जटिल कार्यों जैसे कोडिंग आदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नहीं कर सकता।
4. कृत्रिम बुद्धिमत्ता की लागत कई लाख डालर भी हो सकती है।
5. कृत्रिम बुद्धिमत्ता से रचनात्मक और भावनात्मक की कमी और मानवीय गुणों का अभाव होना है।
6. कृत्रिम बुद्धिमत्ता को प्रशिक्षित नहीं किया जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का हिंदी के अस्तित्व में महत्व : इसका बहुत बड़ा महत्व है। यह हिंदी के भविष्य को सुनिश्चित करता है। यूनेस्को ने अपने एक रिपोर्ट में कहा है कि शताब्दी के अंत तक विश्व की लगभग आधी भाषाएं विलुप्त हो सकती हैं। अतः हिंदी को इस विलुप्त होने वाली श्रेणी से बचाने के लिए हमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपनाना चाहिए।

उपसंहार : कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संबंध में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों चर्चाएं हैं। एक तरफ लगता है कि यह मानव सभ्यता के भविष्य के बाधा खड़ी करेगी और दूसरी तरफ लगता है कि यह तरक्की के नए मार्ग लाएगी। मनुष्य जैविक विकास क्रम की धीमी प्रक्रिया है। तो लगता है कि वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नहीं झेल पाएगी। परन्तु यह तरक्की के नए मार्ग भी साथ में दिखा रही है। इससे यहीं निष्कर्ष निकलता है कि हम यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सावधानी से उपयोग करें तो यह मानव सभ्यता के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगी।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दक्षिणी दिल्ली-॥ के सदस्य कार्यालय स्तर पर संस्थान में हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दक्षिणी दिल्ली-॥ के तत्वावधान में समिति के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 6 अगस्त 2025 को अपराह्न 3 बजे हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संबंधित प्रतियोगिता का विषय “कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का उपयोग और राजभाषा हिंदी” था। प्रतियोगिता में लगभग 23 सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों द्वारा भाग लिया गया। प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार सुश्री शांति मैथ्यू, वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बसईदारापुर, दिल्ली, द्वितीय पुरस्कार सुश्री शालू चौधरी, वैज्ञानिक-सी, सी-डॉट, मंडी रोड़, महारौली, दिल्ली, तृतीय पुरस्कार श्री अभिजीत कुमार, तकनीशियन, सीएसआईआर-केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त दो प्रोत्साहन पुरस्कार सुश्री नैसी वर्गिस, वरिष्ठ नर्सिंग अधिकारी, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, बसईदारापुर, दिल्ली और श्री कृष्णलाल, भंडारी, सशस्त्र सेना चिकित्सा सामान डिपो, दिल्ली को प्रदान किया गया।

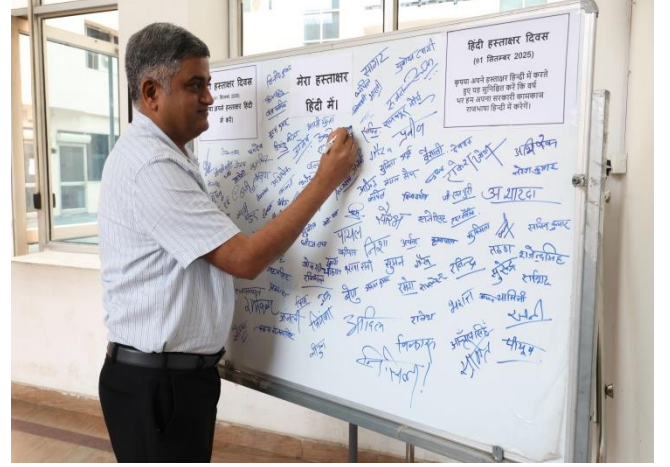


संस्थान की गतिविधियां

संस्थान में हिन्दी दिवस माह

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान में दिनांक 01 सितम्बर से 19 सितम्बर 2025 तक हिंदी माह पूर्ण उत्साह के साथ मनाया गया। इस उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस माह के अवसर पर हस्ताक्षर दिवस, हिंदी कार्यशाला, टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी-कर्मचारी वर्ग), वाद-विवाद प्रतियोगिता (संविदागत एवं प्रोजैक्ट वर्ग) एवं श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके साथ ही इस वर्ष भी “स्वरचित हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता” (सभी वर्ग के अधिकारी एवं कर्मचारी) आयोजित की गई। संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. अनुप अन्वीकर के निदेशन में उपनिदेशक (राजभाषा) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के सहयोग से किया गया।

हिंदी माह की प्रथम गतिविधि हस्ताक्षर दिवस का आयोजन दिनांक 01 सितम्बर 2025 को किया गया, जिसके अंतर्गत संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं प्रोजैक्ट कर्मचारियों आदि को अपने सरकारी कामकाज में हस्ताक्षर अनिवार्य रूप से हिंदी में करने का निदेश दिया गया। इसके साथ ही दिनांक 01 सितम्बर 2025 को संस्थान के स्वागत कक्ष में बोर्ड रखा गया और संस्थान के निदेशक महोदय सहित सभी वरिष्ठ वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं सभी कर्मचारियों ने अपने हस्ताक्षर हिंदी में किए। इस गतिविधि का उद्देश्य सरकारी कामकाज को राजभाषा हिंदी में किए जाने के संबंध में उचित वातावरण बनाया जाना था।



हस्ताक्षर दिवस पर हस्ताक्षर करते हुए निदेशक महोदय



हस्ताक्षर करते हुए संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग



हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए व्याख्याता

तत्पश्चात् दिनांक 01 सितम्बर 2025 को अपराह्न 3 बजे से प्रशासन वर्ग में प्रशासनिक कार्य करने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं क्षेत्रीय इकाईयों के लिए एक ऑनलाइन/ऑफलाइन वेब माध्यम से हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'राजभाषा में काम करना आसान और तिमाही रिपोर्ट भरने संबंधी जानकारी' था। कार्यशाला में व्याख्याता के रूप में डॉ. कुमार पाल शर्मा, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के निदेशक महोदय की गरिमामयी उपस्थिति रही। डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (रा.भा.) द्वारा व्याख्याता का परिचय देने के पश्चात् उन्होंने व्याख्याता को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया। डॉ. कुमार पाल शर्मा जी ने राजभाषा के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही रिपोर्ट को विधिवत् रूप से भरने हेतु रिपोर्ट के प्रत्येक बिंदु पर विस्तृत चर्चा करके इसे भरने के तरीके पर प्रकाश डाला।

इसी क्रम में दिनांक 03 सितम्बर 2025 को अपराह्न 3 बजे संस्थान के सभी स्थायी अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय - "सरकारी बनाम नीजि स्वास्थ्य सेवाएं : पक्ष व विपक्ष था। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में श्री नरेश कुमार, उपनिदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो एवं डॉ. रजनीकांत श्रीवास्तव, पूर्व निदेशक, गोरखपुर को आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता ऑनलाइन/ऑफलाइन माध्यम से आयोजित की गई। संबंधित प्रतियोगिता में अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इसके पश्चात् दिनांक 04 सितम्बर 2025 को अपराह्न 03 बजे प्रोजेक्ट एवं संविदा में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु



कार्यशाला में भाग लेते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी



टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कर्मचारी



श्रुतलेख प्रतियोगिता का संचालन करते हुए डॉ. वंदना शर्मा



निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते हुए अधिकारी/कर्मचारी

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय “वर्तमान में विदेश में अध्ययन “अवसर या चुनौती था। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. रजनीकांत दिक्षित, वैज्ञानिक-ई द्वारा किया गया और प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में डॉ. सतेन्द्र सिंह, पूर्व उपनिदेशक, संसदीय राजभाषा समिति एवं डॉ. नीलकंठ, एसोसिएट प्रोफेसर, एनसीईआरटी, दिल्ली को आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता का विषय अत्यंत प्रासंगिक होने के कारण संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इसी क्रम में दिनांक 08 सितम्बर 2025 को पूर्वाह्न 11 बजे संस्थान के प्रशासनिक कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों के लिए टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। संबंधित प्रतियोगिता में 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया। हिंदी माह की अगली गतिविधि के अंतर्गत दिनांक 08 सितम्बर 2025 को अपराह्न 3 बजे से संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में लगभग 25 प्रतिभागियों द्वारा भाग लिया गया।

तत्पश्चात् दिनांक 09 सितम्बर 2025 को पूर्वाह्न 11 बजे संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु संयुक्त रूप से निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का संचालन संस्थान के वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री जितेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। प्रतियोगिता का विषय “प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग: पर्यावरण के लिए खतरा या समाज में बढ़ती असहिष्णुता के प्रभाव” था। संबंधित प्रतियोगिता में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसी क्रम में दिनांक 09 सितम्बर 2025 को ही अपराह्न 3 बजे “स्वरचित हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।



हिंदी स्लोगन प्रतियोगिता में स्लोगन प्रस्तुत करते हुए कर्मचारी



कार्यक्रम का संचालन करते हुए उपनिदेशक (रा.भा.)



मुख्य अतिथि महोदय का स्वागत करते हुए निदेशक महोदये



संबोधित करते हुए निदेशक महोदय

इस प्रतियोगिता में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों/ अधिकारियों/कर्मचारियों/प्रोजैक्ट एवं संविदागत अधिकारियों/कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने एक शीट पर राजभाषा हिंदी पर एक स्लोगन लिखकर हिंदी अनुभाग में जमा कराए। संबंधित प्रतियोगिता में 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संस्थान द्वारा दिनांक 19 सितम्बर 2025 को हिंदी माह की अंतिम गतिविधि पुरस्कार वितरण समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पी.एल. साहु, निदेशक एवं सीईओ, राष्ट्रीय डोप परीक्षण प्रयोगशाला को और सम्मानित अतिथि के रूप में श्री जगदीश राजेश, उपमाहनिदेशक, आईसीएमआर को आमंत्रित किया गया। कवि के रूप में श्री दीपक गुप्ता को आमंत्रित किया गया। समारोह का समग्र संचालन डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। समारोह के आरंभ में संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. अनुप अन्वीकर द्वारा मुख्य अतिथि एवं कवि महोदय को प्लांटर एवं शॉल भेंट कर विधिवत रूप से स्वागत किया गया। इसके पश्चात् निदेशक महोदय द्वारा संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि संस्थान में आयोजित गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का उद्देश्य राजभाषा को उसका उचित दर्जा दिलाना है। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक कर्तव्य है और हमें निरंतर इस दिशा में प्रयासरत रहना चाहिए।

निदेशक महोदय के संबोधन के पश्चात् डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक द्वारा वर्ष 2024-25 के दौरान संस्थान में राजभाषा हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु पुरस्कारों, संस्थान की प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारों, तकनीकी अधिकारी प्रोत्साहन योजना, प्रोजैक्ट एवं संविदागत प्रोत्साहन योजना, प्रोत्साहन योजना, वैज्ञानिक वर्ग एवं प्रोत्साहन योजना, तकनीकी



रा.भा. विभाग की प्रोत्साहन योजना का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



रा.भा. विभाग की प्रोत्साहन योजना का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



संस्थान की प्रोत्साहन योजना का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



संस्थान की प्रोत्साहन योजना का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए

संवर्ग के पुरस्कारों की घोषणा की। संबंधित पुरस्कार मुख्य अतिथि महोदय के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए।

राजभाषा विभाग की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत श्री मोहन सिंह बिष्ट एवं श्री धीरज सिंह रावत ने प्रथम, श्री अजय मित्रा, श्री दीपक लाठर, श्री सुबोध कुमार त्यागी ने द्वितीय और श्री रमेश जंडवानी, श्री राजकपूर मौर्य, श्री शिशुपाल सिंह नेगी, श्री अबरार अली तथा श्रीमती निधि गुप्ता ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेसन देने का पुरस्कार श्री हेमंत कुमार, प्रशासनिक अधिकारी को प्रदान किया गया। तत्पश्चात् संस्थान की प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारों की घोषणा की गई, जिसमें श्री प्रताप कुमार मंडल व श्री वंशीधर को प्रथम, श्री पवन कुमार मीणा, श्री हर्ष वर्धन अटल, श्री दीपक कुमार को द्वितीय, श्री राकेश जोशी, श्री चंद्रहास मंडल, श्री संजीव कुमार, श्री रमाकान्त पाल एवं श्रीमती कामिनी गंधोक को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके पश्चात् तकनीकी अधिकारी वर्ग की प्रोत्साहन योजना के पुरस्कारों की घोषणा की गई जिसमें श्रीमती कमला नेगी को प्रथम और मु. राशिद परवेज को द्वितीय पुरस्कार दिया गया।

इसी क्रम में तकनीकी संवर्ग के पुरस्कारों के अंतर्गत श्री अनसुया प्रसाद को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया और प्रोत्साहन योजना, वैज्ञानिक वर्ग के अंतर्गत डॉ. विनीता सिंह को मुख्य अतिथि महोदय के कर-कमलों से प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। संबंधित प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत संविदा एवं अस्थायी कर्मचारियों हेतु लागू प्रतियोगिता में सुश्री रजनी को प्रथम, सुश्री मेधा एवं सुश्री दिव्या को द्वितीय, सुश्री बरखा रानी, श्री मॉटू और सुश्री निशा कुमारी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रोत्साहन योजनाओं के पश्चात् संस्थान में आयोजित प्रतियोगिताओं के



प्रोत्साहन योजना का तकनीकी अधिकारी वर्ग का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



प्रोत्साहन योजना वैज्ञानिक वर्ग का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



प्रोत्साहन योजना प्रोजेक्ट एवं संविदा वर्ग का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए



वाद-विवाद प्रतियोगिता (संविदा एवं प्रोजेक्ट वर्ग) का पुरस्कार प्राप्त करते हुए

अंतर्गत वाद-विवाद प्रतियोगिता (संविदा एवं प्रोजेक्ट वर्ग) के अंतर्गत डॉ. आदित्य आर्य को प्रथम, सुश्री रीता शर्मा को द्वितीय, सुश्री सुमिता भट्ट को तृतीय और सुश्री रिशु शर्मा और डॉ. छवि को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। संबंधित पुरस्कार आमंत्रित कवि श्री दीपक गुप्ता के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

इसके पश्चात् तत्पश्चात् डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक द्वारा आमंत्रित कवि महोदय का परिचय देते हुए उन्हें काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किया। कवि श्री दीपक गुप्ता ने अपनी काव्य धारा से उपस्थित वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भाव-विभोर कर दिया। इसके पश्चात् परिषद मुख्यालय से पधारे विशिष्ट अतिथि श्री जगदीश राजेश, उपमहानिदेशक का निदेशक महोदय द्वारा प्लांटर और शॉल से विधिवत स्वागत किया गया। श्री जगदीश राजेश ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की प्रशंसा की और विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्राप्त करने की बधाई दी। इसके पश्चात् वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी वर्ग) के अंतर्गत डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी और श्री अभिषेक को प्रथम पुरस्कार, डॉ. तरुण वत्स, श्री राकेश जोशी को द्वितीय पुरस्कार, डॉ. ऋचा सिंघल, श्री जितेन्द्र परिहार को तृतीय पुरस्कार और डॉ. वैशाली वर्मा और श्री वंशीधर को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके पश्चात् निबंध प्रतियोगिता में डॉ. तरुण वत्स, श्री अभिषेक वर्मा को प्रथम पुरस्कार, सुश्री निधि गुप्ता, श्री अभय वर्मा को द्वितीय पुरस्कार, श्री प्रताप कुमार मंडल, श्री चंद्रहास मंडल को तृतीय पुरस्कार और श्रीमती कमला नेगी तथा श्री जितेन्द्र परिहार को प्रोत्साहन पुरस्कार श्री जगदीश राजेश द्वारा प्रदान किया गया।



काव्य-पाठ करते हुए कवि श्री दीपक गुप्ता जी



काव्य-पाठ सुनते हुए संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी



विशिष्ट अतिथि का स्वागत करते हुए



वाद-विवाद प्रतियोगिता (अधिकारी/कर्मचारी वर्ग) का पुरस्कार प्राप्त करते हुए

इसके साथ ही दिनांक 08 सितम्बर 2025 को अपराहन में आयोजित श्रुतलेख प्रतियोगिता में श्री राकेश जोशी, श्री दीपक कुमार को प्रथम पुरस्कार, श्री अखिलेश्वर शारदा, डॉ. तरुण वत्स को द्वितीय पुरस्कार, श्री अभय वर्मा, संदीप प्रजापति को तृतीय पुरस्कार और श्री सुमित मणि तिवारी तथा श्रीमती कमला नेगी को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया और दिनांक 08 सितम्बर 2025 को आयोजित टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिताओं की घोषणा की गई, जिसमें श्री अखिलेश्वर शारदा को प्रथम, श्री दीपक कुमार को द्वितीय, श्री रमेश जंडवानी को तृतीय और श्री मोहन सिंह बिष्ट और श्री वंशीधर को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। संबंधित पुरस्कार संस्थान के निदेशक महोदय के कर-कमलों से प्रदान किए गए।

इसी क्रम में अंत में दिनांक 09 सितम्बर 2025 को ही आयोजित स्वरचित उत्कृष्ट स्लोगन प्रतियोगिता के अंतर्गत सुश्री श्वेता, सुश्री रिशु शर्मा, डॉ. अनुप्रिया मिन्हास को उत्कृष्ट और श्री सुमित मणि तिवारी और श्री अभिषेक को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। संबंधित पुरस्कार संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रवीण कुमार अतुल द्वारा प्रदान किए गए।

पुरस्कार वितरण समारोह के पश्चात् मुख्य अतिथि महोदय द्वारा सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया गया। उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग पर और इसकी बढ़ती हुई उपयोगिता पर अपने विचार प्रकट किए, जिससे सभी उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने संबोधन में संस्थान में राजभाषा हिंदी में हो रही विभिन्न गतिविधियों एवं बड़ी संख्या में भाग लेने वाले प्रतिभागियों पर हर्ष जाहिर किया और आशा की कि भविष्य में इस दिशा में और ठोस कदम उठाए जाएं। मुख्य अतिथि महोदय के प्रेरणादायक संबोधन के पश्चात् संस्थान द्वारा मुख्य अतिथि महोदय एवं



निबंध प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारी



श्रुतलेख प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारी



टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए कर्मचारी



संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि महोदय

कवि महोदय को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। समारोह के अंत में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. प्रवीण कुमार अतुल, वैज्ञानिक-एफ द्वारा मुख्य अतिथि, कवि महोदय, विशिष्ट अतिथि एवं उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद



मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न प्रदान करते निदेशक महोदय

संस्थान की क्षेत्रीय इकाईयों में हिंदी दिवस

संस्थान मुख्यालय ही नहीं वरन् संस्थान की 4 क्षेत्रीय इकाईयों में भी निर्देशानुसार हिंदी दिवस पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और कर्मचारियों को अपना सरकारी कामकाज राजभाषा में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। क्षेत्रीय इकाईयों में प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर करने के प्रयास की दिशा में कदम उठाया गया। इसी क्रम में गुवाहाटी, रायपुर, रांची, बंगलुरु आदि क्षेत्रीय इकाईयों में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में वाद-विवाद या निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय इकाई, गुवाहाटी

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, गुवाहाटी (असम) में दिनांक 17 सितम्बर 2025 को हर्षोल्लास के साथ निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में गुवाहाटी, क्षेत्रीय इकाई के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में गुवाहाटी के डॉ. ए.एस. अंजना सिंघा नाओरेमा, सहायक प्रोफेसर (जूलॉजी) कॉटन यूनिवर्सिटी, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया। निबंध प्रतियोगिता का विषय “ 1. आत्म निर्भर भारत, 2. ऑर्टीफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) का महत्व, 3. सोशल मीडिया और युवा” था। मुख्य अतिथि द्वारा निबंध प्रतियोगिता की प्रतियों का मूल्यांकन किया गया,

जिसमें सुश्री चाँदनी बोरो को प्रथम, सुश्री प्रियंका मच को द्वितीय, सुश्री अनुश्री दास को तृतीय और सुश्री निखिता देवी एवं सुश्री बोर्नाली गोगोई को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय इकाई, रायपुर

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रायपुर में दिनांक 12 सितम्बर 2025 को निबंध प्रतियोगिता का हर्षोल्लास के साथ आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई के अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सीमा चन्द्रकार, सहायक प्रध्यापक, गुरुकुल महिला महाविद्यालय, कालीबाड़ी, रायपुर (छत्तीसगढ़) को आमंत्रित किया गया था। मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की प्रतियों का मूल्यांकन किया गया, जिसमें श्री उदवीर सिंह को प्रथम, कुमारी प्रिया को द्वितीय, श्री राजेश कुमार को तृतीय और श्री रमेश कुमार शर्मा एवं श्री लोचन मोहन्ती को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। अंत में अतिथि महोदय को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए समारोह का समापन हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, रांची

संस्थान की क्षेत्रीय इकाई, रांची में दिनांक 01 सितम्बर से 30 सितम्बर 2025 तक हिंदी माह

मनाया गया, जिसके अंतर्गत हस्ताक्षर हिंदी में करने की अनिर्वायता, दैनिक कार्यों जैसे फाइल नोटिंग, पत्राचार, प्रविष्टियां हिंदी में, सभी सरकारी आदेश एवं अधिसूचनाएं हिंदी में जारी करना, स्टाफ को कार्यालयी कार्यों में हिंदी भाषा के उपयोग हेतु प्रोत्साहित करना, भाषाई जागरूकता के लिए पोस्टर, बैनर और प्रेरणास्पद नारों का प्रदर्शन आदि कार्य किया गया। इस अवसर पर दिनांक 12 सितम्बर 2025 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई के सभी लगभग 22 अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का विषय “भारतीय सेना की शौर्य गाथाएं” था। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्यामा प्रसाद विश्वविद्यालय, रांची के विभागाध्यक्ष डॉ. जिंदर सिंह मुंडा को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा निबंध प्रतियोगिता के प्रतियों का मूल्यांकन किया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा हिंदी भाषा पर एक प्रेरणादायक व्याख्यान दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने हिंदी की महत्ता, उसकी राष्ट्र को जोड़ने की भूमिका और इसके प्रसार के उपायों पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन प्रभारी अधिकारी डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी द्वारा किया गया।

दिनांक 15 सितम्बर 2025 को डॉ. प्रवीण कुमार भारती, वैज्ञानिक-एफ, एनआईएमआर, दिल्ली एवं प्रभारी अधिकारी, डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी, क्षेत्रीय इकाई, रांची द्वारा प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु पुरस्कारों की घोषणा के साथ ही प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। प्रतियोगिता में श्रीमती प्रतिमा लेंका को प्रथम, सुश्री दीक्षा सिंह को द्वितीय, श्री देवेश त्रिपाठी को तृतीय एवं श्री जायबीर भोगता और सुश्री सोनी किसपोट्टा को प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए चुना गया। प्रभारी अधिकारी द्वारा विस्तारित प्रोत्साहन पुरस्कार हेतु श्री मुन्ना शाह, श्री रमेश मुंडी, श्री फरुइल शेख, सुश्री सुनीता कुमारी और श्री रोशन राज को चुना। इसके

अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी द्वारा श्री मोहित महतो, श्री सुभाष राणा, श्रीमती जया कुमारी एवं सुश्री रुपंती लकड़ा की विशेष सराहना की गई।

अंत में कार्यक्रम का समापन डॉ. प्रवीण कुमार भारती और डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें सभी प्रतिभागियों, मुख्य अतिथि, निर्णायकों तथा आयोजकों का आभार प्रकट किया गया। इस आयोजन ने न केवल हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता को बढ़ाया, बल्कि सभी कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित किया। यह आयोजन हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सफल और सराहनीय पहल सिद्ध हुआ।

क्षेत्रीय इकाई, बंगलुरु

संस्थान की बंगलुरु, क्षेत्रीय इकाई में दिनांक 26 सितम्बर 2025 को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय “कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) सकारात्मक या नकारात्मक” या “मोबाइल - उपयोगी या हानिकारक” था। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्रभारी अधिकारी, डॉ. एच.सी. वाणी द्वारा देवी सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। प्रतियोगिता में क्षेत्रीय इकाई के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्ण भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा), परिषद मुख्यालय को ऑनलाइन माध्यम से आमंत्रित किया गया था। मुख्य अतिथि द्वारा ही संबंधित प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया गया, जिसमें सुश्री काजल बनकोटी को प्रथम, सुश्री विप्राशा तोमर को द्वितीय, श्री महेश कुमार जयसवाल को तृतीय तथा श्री मनोज कुमार और श्रीमती सुषमा कुमारी को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह का समापन प्रभारी अधिकारी डॉ. एच.सी. वाणी, वैज्ञानिक-डी द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद के साथ सम्पन्न हुआ।

संस्थान की गतिविधियां

संस्थान का वार्षिकोत्सव

किसी संस्थान प्रतिष्ठान एवं कार्यालय के लिए वार्षिक दिवस समारोह मनाया इस बात को इंगित करता है कि वह संस्थान प्रगति की राह पर अग्रसर है। इसी का साक्षात् प्रमाण राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान द्वारा अपना 48वां वार्षिक दिवस समारोह दिनांक 18 दिसंबर 2025 को मनाया गया। संस्थान के लिए यह अत्यन्त गर्व की बात है कि वर्ष 1977 में बोए गए बीज ने आज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लिया है और इसकी शाखाएं देश के कोने-कोने में 8 क्षेत्रीय इकाईयों के रूप में फैली हुई हैं। वर्ष 1977 में 22-शामनाथ मार्ग, दिल्ली स्थित कार्यालय में मात्र कुछ अधिकारियों/कर्मचारियों से आरंभ हुए मलेरिया अनुसंधान केन्द्र ने धीरे-धीरे अपने आप को एक व्यापक रूप में स्थापित किया, जिसे आज आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, द्वारका, नई दिल्ली के नाम से जाना जाता है। आज भारत में ही नहीं अपितु विश्व में इसे प्रतिष्ठापित करने में यहां के वैज्ञानिकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मलेरिया नियंत्रण हेतु मौलिक व जन-उपयोगी अनुसंधानों द्वारा मलेरिया निदान एवं उपचार संबंधी उपायों एवं तरीकों की खोज करने में संस्थान का वैज्ञानिक समुदाय लगातार प्रयासरत है।

संस्थान का 48वां वार्षिक दिवस दिनांक 18 दिसंबर 2025 को अपराह्न 2.00 बजे आरंभ हुआ। इस शुभ अवसर पर अत्यन्त गर्व की बात है कि इस उपलक्ष में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राजीव बहल, सचिव, डीएचआर एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आभासी रूप से),



मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथि



मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ. कैलाश पाण्डे



संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक महोदय

विशेष अतिथि के रूप में डॉ. तनु जैन, निदेशक, एनसीवीबीडीसी, सम्मानित अतिथि के रूप में डॉ. अल्का शर्मा, अपर महानिदेशक, आईसीएमआर, डॉ. संघमित्रा पती, अपर महानिदेशक, आईसीएमआर एवं वार्षिक दिवस संभाषण हेतु माननीय मुख्य अतिथि डॉ. शेखर सी. मांडे, पूर्व सचिव, डीएसआईआर एवं महानिदेशक, सीएसआईआर की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस समय कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही मां सरस्वती की आराधना के साथ किया गया। तत्पश्चात् माननीय मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. कैलाश चन्द्र पाण्डे, वैज्ञानिक-एफ, डॉ. नितिका, वैज्ञानिक-ई, डॉ. वैशाली वर्मा, वैज्ञानिक-सी एवं श्री अजय सिंह सोलंकी, लेखा अधिकारी द्वारा पुष्प भेंट कर एवं शॉल पहनाकर विधिवत् रूप से किया गया।

तत्पश्चात् निदेशक डॉ. अनुप अन्वीकर ने इस शुभ अवसर पर पधारे माननीय अतिथिगणों एवं महानुभावों और उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया और संस्थान के विकास एवं प्रगति के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में बताया कि मलेरिया उन्मूलन हेतु प्रतिबद्धता में अनुसंधान का योगदान बहुमूल्य है। इसके साथ ही निदेशक महोदय ने आईसीएमआर-एनआईएमआर की भावी योजनाओं एवं नए लक्ष्यों पर भी प्रकाश डाला। स्वागत समारोह के पश्चात् डॉ. तनु जैन, निदेशक, एनसीवीबीडीसी का विशेष संबोधन हुआ। इसी क्रम में डॉ. अल्का शर्मा, अपर महानिदेशक, आईसीएमआर एवं डॉ. संघमित्रा पती, अपर महानिदेशक, आईसीएमआर ने संबोधित किया गया।



संबोधित करते हुए डॉ. तनु जैन, निदेशक, एनसीवीबीडीसी



संबोधित करते हुए डॉ. अल्का शर्मा, अपर महानिदेशक, आईसीएमआर



उत्कृष्ट अनुसंधान पेपर पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. कैलाश पाण्डे एण्ड टीम



उत्कृष्ट समीक्षा पेपर पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. नितिका

इस कार्यक्रम में संस्थान द्वारा पहली बार आरंभ किए गए पुरस्कारों के अंतर्गत इस वर्ष से बैस्ट पेपर अवार्ड और बैस्ट रिव्यू अवार्ड प्रदान किया गया और इस योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट अनुसंधान पेपर पुरस्कार डॉ. कैलाश पाण्डे एण्ड टीम, डॉ. अभिनव सिन्हा एण्ड टीम एवं डॉ. विनीता सिंह एवं टीम को प्रदान किया गया। इसके साथ ही डॉ. नितिका एण्ड टीम, डॉ. मृदुल मोहन एण्ड टीम को उत्कृष्ट समीक्षा पेपर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उल्लेखित पुरस्कार वितरण के पश्चात् डॉ. शेखर सी. मांडे, पूर्व सचिव, डीएसआईआर एवं महानिदेशक, सीएसआईआर द्वारा वार्षिक दिवस संभाषण प्रस्तुत किया गया, जिसका विषय "चैजिंग स्पैक्ट्रम ऑफ इन्फेक्शियस डिसीज" था। उन्होंने अपने संबोधन में संक्रामक रोगों के बदलते परिदृश्य पर प्रकाश डाला और व्यापक निगरानी, संरचनात्मक जीवविज्ञान और महामारी से निपटने के लिए सक्रिय तैयारी की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. मांडे ने इस बात पर जोर दिया कि निगरानी का दायरा एसएआरएस-कोविड-2 तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें सभी प्रकार के संक्रमण शामिल होने चाहिए। वे भविष्य के खतरों का पूर्वानुमान लगाने के लिए विभिन्न संक्रामक रोगों के रुझानों पर नजर रखने की वकालत करते हैं। उन्होंने नैदानिक परीक्षणों के माध्यम से व्यापक रूप से पता चलने से पहले नए वेरिएंट का पता लगाने के लिए सीवेज निगरानी प्रणालियों के उपयोग की प्रभावशीलता पर प्रकाश डाला। उन्होंने विभिन्न स्लाइडों के माध्यम से इस विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया।

डॉ. शेखर सी. मांडे के प्रेरणादायक संबोधन के पश्चात् डॉ. राजीव बहल, सचिव, डीएचआर एवं



वार्षिक संभाषण देते हुए मुख्य अतिथि



मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करते निदेशक महोदय



सम्मानित अतिथि को स्मृति चिह्न भेंट करते निदेशक महोदय



धन्यवाद ज्ञापित करते हुए डॉ. नितिका

महानिदेशक, आईसीएमआर ने आभासी रूप से अध्यक्षीय संबोधन दिया। तत्पश्चात् संस्थान द्वारा माननीय मुख्य अतिथि एवं सम्मानित अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. नितिका, वैज्ञानिक-ई द्वारा माननीय अतिथिगणों, वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं उपस्थित सभी कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इसी क्रम में दिनांक 18 दिसम्बर 2025 को अपराह्न 4 बजे एक सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने अत्यंत उत्साहपूर्वक भाग लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरंभ गणेश वंदना से हुआ। इसके साथ ही एकल गायन, गिटार, नृत्य, संगीत प्रस्तुतियां, लघु नाटक, काव्य-पाठ आदि गतिविधियां आयोजित की गईं। कार्यक्रम के सफल आयोजन पर संस्थान के निदेशक महोदय डॉ. अनुप अन्वीकर द्वारा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं। अंत में प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं गतिविधियों में शामिल प्रतिभागियों के नाम की घोषणा कर उन्हें डॉ. कैलाश चन्द्र पाण्डे, वैज्ञानिक-एफ, डॉ. ऋचा सिंघल, वैज्ञानिक-सी, डॉ. सुचि त्यागी, वैज्ञानिक-सी के कर-कमलों द्वारा सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् डॉ. रजनीकांत दिक्षित, वैज्ञानिक-ई द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ।



सांस्कृतिक कार्यक्रम की कुछ झलकियां

संस्थान की गतिविधियां

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- सितंबर माह के दौरान, आईसीएमआर-एनआईएमआर के तकनीकी सहायकों के लिए प्रेरण प्रशिक्षण कार्यक्रम, दिनांक 19 से 20 सितंबर 2025 तक, एनआईबी, नोएडा में आयोजित किया गया।
- रांची, झारखंड में दिनांक 23 से 25 सितंबर 2025 तक मलेरिया राज्य कार्यक्रम कार्यालय (वीबीडी) द्वारा जिला रोगवाहक जनित रोग सलाहकारों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत नामकुम जिले के चंदघासी गांव को कीटविज्ञानीय सर्वेक्षण क्षेत्र गतिविधि के लिए चुना गया है।
- बेंगलूर मेडिकल कॉलेज और साथ ही बेंगलूर स्थित क्षेत्रीय इकाई में "कीट विज्ञान और कीटपालन प्रशिक्षण" का आयोजन किया गया। सीएमआर-एनआईएमआर, क्षेत्रीय इकाई, बेंगलूरु के छात्रों के साथ मच्छर पकड़ने से लेकर उनके पालन-पोषण और अनुसंधान तक कीट विज्ञान और कीटपालन से संबंधित ज्ञान साझा किया गया।
- दिनांक 7 सितंबर 2025 से 21 सितंबर 2025 तक आईआईएम, विशाखापत्तनम में मध्य-करियर विकास कार्यक्रम के लिए निर्धारित आईआईएम (विशाखापत्तनम) के माध्यम से आईसीएमआर वैज्ञानिकों के लिए तीसरे सत्र का मध्य-करियर विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था।
- अक्टूबर माह के दौरान राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (एनआईएमआर) की क्षेत्रीय इकाई, रांची में प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए आईएचआईपी, एनबीएस स्टेनिंग और माइक्रोस्कोपिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय रोगवाहक जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) के अंतर्गत, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (एनआईएमआर) क्षेत्रीय इकाई, रांची में दिनांक 7 से 9 अक्टूबर 2025 तक प्रयोगशाला तकनीशियनों (एलटी) के लिए एक व्यापक तीन दिवसीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का प्राथमिक उद्देश्य लिम्फैटिक फाइलेरियासिस (एलएफ) के निदान और समझ में प्रयोगशाला कर्मियों की तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करना था। एलएफ एक परजीवी जनित रोग है जो फाइलारियोडीडिया परिवार के नेमाटोड, मुख्य रूप से वुचेरिया बैनक्रॉफ्टी (जो वैश्विक एलएफ मामलों के 90% से अधिक के लिए जिम्मेदार है) और कम सामान्यतः ब्रुगिया मलाई और ब्रुगिया टिमोरि के कारण होता है। ये परजीवी संक्रमित मादा मच्छरों, मुख्य रूप से क्यूलेक्स विनक्वेफैसिएटस के काटने से मनुष्यों में फैलते हैं, जो जैविक वाहक के रूप में कार्य करते हैं।

- अक्टूबर माह के दौरान, आईसीएमआर राष्ट्रीय जीव विज्ञान संस्थान (एनआईबी), नोएडा के तकनीकी सहायकों के लिए हरिद्वार स्थित राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय ईकाई हरिद्वार में दो दिवसीय क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- अक्टूबर माह के दौरान, डीएचआर-आईसीएमआर क्षमता निर्माण पहल के तहत एमआरयू-एमआरएचआरयू योजना के अंतर्गत नैदानिक परीक्षण कार्यशाला का आयोजन एमजीएम मेडिकल कॉलेज, जमशेदपुर में किया गया। नैदानिक परीक्षण डिजाइन और कार्यान्वयन में अनुसंधान दक्षताओं को मजबूत करने के लिए डीएचआर-आईसीएमआर क्षमता निर्माण पहल के अंतर्गत एमआरयू-एमआरएचआरयू योजना के लिए तीन दिवसीय नैदानिक परीक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नैतिक सिद्धांत, नियामक आवश्यकताएं, गुड क्लिनिकल प्रैक्टिस (जीसीपी) दिशानिर्देश, परीक्षण डिजाइन, डेटा प्रबंधन और निगरानी जैसे प्रमुख पहलुओं को शामिल किया गया। प्रतिभागियों ने प्रोटोकॉल विकास, सूचित सहमति, सीटीआरआई पंजीकरण और प्रतिकूल घटना रिपोर्टिंग पर इंटरैक्टिव व्याख्यान और व्यावहारिक सत्रों में भाग लिया। कार्यशाला में साइट की तैयारी, सामुदायिक सहभागिता और डिजिटल और ट्रांसलेशनल अनुसंधान में उभरते रुझानों पर भी जोर दिया गया। कुल मिलाकर, प्रशिक्षण ने प्रतिभागियों की नैदानिक परीक्षण संचालन की समझ को बढ़ाया और भारत में एक मजबूत और नैतिक रूप से सुदृढ़ नैदानिक अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के डीएचआर-आईसीएमआर मिशन को सुदृढ़ किया।
- आईसीएमआर, एनआईएमआर और क्षेत्रीय ईकाई-बंगलूरु द्वारा झारखंड में ईडीए परियोजना के तहत निजी स्वास्थ्य सुविधाओं के तकनीशियनों को मलेरिया माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए आईएचआईपी, एनबीएस स्टेनिंग और सूक्ष्मदर्शी प्रशिक्षण: राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान (एनआईएमआर) फील्ड यूनिट, रांची में राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) के अंतर्गत 7 से 9 अक्टूबर 2025 तक प्रयोगशाला तकनीशियनों (एलटी) के लिए एक व्यापक तीन दिवसीय राज्य स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का प्राथमिक उद्देश्य लिम्फैटिक फाइलेरियासिस (एलएफ) के निदान और समझ में प्रयोगशाला कर्मियों की तकनीकी क्षमताओं को मजबूत करना था। एलएफ एक परजीवी जनित रोग है जो फाइलारियोडीडिया परिवार के नेमाटोड, मुख्य रूप से वुचेरिया बैनक्रॉफ्टी (जो वैश्विक एलएफ मामलों के 90% से अधिक के लिए जिम्मेदार है), और कम सामान्यतः ब्रुगिया मलाई और ब्रुगिया टिमोरि के कारण होता है। ये परजीवी संक्रमित मादा मच्छरों, मुख्य रूप से क्यूलेक्स क्विनक्वेसिएटस के काटने से मनुष्यों में फैलते हैं, जो जैविक वाहक के रूप में कार्य करते हैं।
- अक्टूबर माह के दौरान, झारखंड में ईडीए परियोजना के तहत निजी स्वास्थ्य सुविधाओं के तकनीशियनों को आईसीएमआर, एनआईएमआर और एफयू-बीएनजी द्वारा मलेरिया माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

- राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय ईकाई बेंगलुरु में ऑनलाइन हिंदी पखवाड़ा मनाया गया संबंधित कार्यक्रम में डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (राजभाषा) मुख्य वक्ता थीं।
- नवंबर माह के दौरान, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय ईकाई रांची के आईपीएच परिसर के प्रशिक्षण हॉल में रांची के विभिन्न प्रयोगशालाओं से लगभग 70 प्रयोगशाला तकनीशियनों ने मलेरिया सूक्ष्मदर्शी माइक्रोस्कोपी) पर केंद्रित एक दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। सत्र का संचालन राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान की क्षेत्रीय ईकाई, बेंगलुरु के एक वैज्ञानिक और विश्व स्वास्थ्य संगठन लेवल-1 प्रमाणित तकनीकी अधिकारी ने किया, जिन्होंने कार्यक्रम में अपना व्यापक अनुभव साझा किया।
- नवंबर माह के दौरान, संबंधित कार्यक्रम का उद्देश्य प्रयोगशाला कर्मियों के निदान कौशल को मजबूत करना था, विशेष रूप से माइक्रोस्कोपी के माध्यम से मलेरिया परजीवियों की पहचान करने में—जो सटीक मलेरिया पहचान और नियंत्रण का एक अनिवार्य घटक है। प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन दिखाए गए, उन्होंने पर्यवेक्षित स्लाइड परीक्षण किए और परजीवी पहचान, स्मीयर तैयार करने और रंगाई तकनीकों के सर्वोत्तम तरीकों को सीखा। सहभागी और कौशल-उन्मुख प्रारूप ने तकनीशियनों को अपनी शंकाओं को दूर करने, अपनी दक्षता में सुधार करने और वर्तमान डब्ल्यूएचओ मानकों के अनुरूप अपने ज्ञान को अद्यतन करने में सक्षम बनाया। कुल मिलाकर, प्रशिक्षण अत्यंत उपयोगी साबित हुआ और उच्च गुणवत्ता वाले मलेरिया निदान के लिए स्थानीय क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- नवंबर माह के दौरान, एनआईएमआर दिल्ली की वैज्ञानिक-ई डॉ. नितिका ने राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय ईकाई रांची में आरसीटी और टीईएस परियोजना के कर्मचारियों के लिए एक व्यापक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया, जिसमें आरसीटी परियोजना कार्यान्वयन के प्रमुख घटकों पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रशिक्षण में औषध की सही खुराक देने की प्रक्रिया, मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) पर विस्तृत मार्गदर्शन और एसीआरएफ और पीआरएफ प्रपत्रों को सही ढंग से भरने के चरण-दर-चरण निर्देश शामिल थे। प्रतिभागियों को प्रोटोकॉल का पालन करने, डेटा की सटीकता सुनिश्चित करने और उचित दस्तावेज़ीकरण प्रक्रियाओं का पालन करने के बारे में जानकारी दी गई। इस सत्र से कर्मचारियों को परियोजना की आवश्यकताओं की बेहतर समझ विकसित करने और क्षेत्र एवं नैदानिक गतिविधियों को प्रभावी ढंग से संचालित करने की उनकी क्षमता को मजबूत करने में मदद मिली।
- आईसीएमआर- राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, की क्षेत्रीय ईकाई-बीएनजी द्वारा झारखंड में निजी स्वास्थ्य सुविधाओं के तकनीशियनों को ईडीए परियोजना के तहत मलेरिया माइक्रोस्कोपी प्रशिक्षण (ईडीए परियोजना) प्रदान किया गया।

- संस्थान में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों, सम्मेलनों और सभाओं के दौरान विशेष रूप से स्वच्छता अभियान चल रहा है। परिसर के सौंदर्यीकरण पर ध्यान दिया जा रहा है और इसके लिए स्थान उपलब्ध कराए जा रहे हैं। स्वच्छता अभियान, विशेष रूप से एसएचएस 5.0 2025, जारी है, जिसके तहत कार्यालय के कई क्षेत्रों को स्वच्छ कर दिया गया है। एसएचएस 5.0 के अंतर्गत सभी गतिविधियां इस वर्ष के निर्देशों के अनुसार पूरी कर ली गई हैं।
- एमबीबीएस छात्रों के लिए उनके पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में 4 स्नातकोत्तर शिक्षकों/संकाय के साथ एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत आईसीएमआर-एनआईएमआर क्षेत्रीय ईकाई, चेन्नई की प्रयोगशाला का ऐच्छक दौरा किया गया। इसमें रोगवाहक नियंत्रण उपायों, मच्छर जीव विज्ञान और जीवन चक्र, परजीवी जीव विज्ञान और आणविक जीव विज्ञान पर बुनियादी प्रशिक्षण दिया गया।
- दिसंबर माह के दौरान भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ) 2025 के अंतर्गत पंचकुला, हरियाणा में विज्ञान प्रदर्शनी और सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान द्वारा आईसीएमआर का प्रतिनिधित्व किया, जिसमें संस्थानों की अनुसंधान गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया। संबंधित कार्यक्रम का विषय: 'विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत के लिए' था।
- आईसीएमआर-एनआईएमआर में मलेरिया उन्मूलन पर शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संबंधित संगोष्ठी कार्यक्रम में राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन रणनीतियों पर एक मुख्य व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, जो 2030 तक भारत को मलेरिया मुक्त देश बनाने के लक्ष्य के अनुरूप है।
- आईसीएमआर-एनआईएमआर ने भारत में मलेरिया उन्मूलन के लिए अनुसंधान और साझेदारी को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान देते हुए अपना 48वां वार्षिक दिवस मनाया। आईसीएमआर-एनआईएमआर के अनुसंधान सूचना प्रकोष्ठ (रीडनफोर्स) द्वारा युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने के लिए एक पुरस्कार समारोह भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुआ, जिन्होंने टीम भावना को बढ़ावा दिया और संस्थान की उपलब्धियों का जश्न मनाया।



संस्थान की गतिविधियां

• संस्थान में स्वस्थ नारी सशक्त परिवार, अभियान का आयोजन

एनआईएमआर आईसीएमआर-एनआईएमआर, नई दिल्ली में महिला सामान्य स्वास्थ्य प्रतिज्ञा और स्वास्थ्य अभियान का उद्घाटन और शुभारंभ हुआ जिसके अंतर्गत एनआईएमआर में स्वास्थ्य शिविर लगाया गया और रक्तचाप, शर्करा, बीएमआई, एनीमिया आदि की स्वास्थ्य जांच की गई। इसी क्रम में संस्थान परिसर में डॉ. अभिनव सिन्हा, वैज्ञानिक ई, एनआईएमआर द्वारा महिलाओं के लिए तनाव प्रबंधन पर व्याख्यान आयोजित किया गया।

इसी क्रम में, एनआईएमआर में स्वास्थ्य शिविर भी लगाया गया, जिसके अंतर्गत रक्तचाप, शर्करा, बीएमआई, एनीमिया संबंधित स्वास्थ्य जांच भी की गई और स्कूलों में व्यक्तिगत स्वच्छता, हाथ धोना, मासिक धर्म स्वच्छता पर अनेक जागरूकता सत्र, आरपीवीवी, सेक्टर 10 द्वारका, नई दिल्ली में आयोजित किए गए। डॉ. प्रियंका गुप्ता बंसल, आईसीएमआर-एनआईएमआर, नई दिल्ली द्वारा पोषण-वीबीडी लिंकेज पोषण संबंधी परामर्श के साथ ही आयरन युक्त भोजन पर जागरूकता सत्र आयोजित किया गया। सितंबर माह 2025 के दौरान "स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार" अभियान के अंतर्गत, एमआरएचआरयू अंगारा ने अंगारा में कई स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया, जिनका मुख्य उद्देश्य समुदाय की महिलाओं के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना था।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य जागरूकता पहल के अंतर्गत संस्थान परिसर में सितंबर माह के दौरान स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार" अभियान शुरू किया गया, जिसके अंतर्गत अनेक गतिविधियों का आयोजन अनेक स्थलों 1. एमआरएचआरयू अंगारा गांव, रांची, 2. अंगारा ब्लॉक, रांची के लेप्सर और जराटोली गांवों में आंगनवाड़ी केंद्र, 3. कसीदीह गांव, सरकारी माध्यमिक विद्यालय, अंगारा ब्लॉक, रांची, 4. चिल्दाग गांव का सिमर टोला, रांची, 5. नया तोरंग, दुमरगढ़ी गांव, रांची, 6. नायक टोला, चिल्दाग गांव, 7. सीनियर सेकेंडरी हाई स्कूल, चिल्दाग, रांची में किया गया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य जागरूकता पहल के तहत स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान आयोजित किया गया जिसके तहत क्षेत्रीय ईकाई बंगलुरु स्थित आईसीएमआर परिसर में रक्तदान अभियान और स्वास्थ्य जांच आयोजित की गई।

इसी क्रम में प्रथम दिवस - दिनांक 17/09/2025 को महिलाओं के स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए एमआरएचआरयू अंगारा द्वारा एक विशेष महिला स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जांच में गुर्दे और यकृत की कार्यप्रणाली, हीमोग्लोबिन और मधुमेह की जांच शामिल थी। व्यक्तिगत रिपोर्ट वितरित की गई और मासिक धर्म स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए सैनिटरी पैड दिए गए।

द्वितीय दिवस - दिनांक 18/09/2025 को अंगारा ब्लॉक के लेप्सर और जराटोली गांवों में स्थित आंगनवाड़ी केंद्रों में मौखिक स्वास्थ्य जांच और जागरूकता शिविर आयोजित किए गए। आरआईएमएस, रांची की डॉ. स्वाति के नेतृत्व में कुल 109 आदिवासी महिलाओं और बच्चों की जांच की गई।

इसी क्रम में तृतीय दिवस - दिनांक 19/09/2025 (शुक्रवार) को अंगारा ब्लॉक के कसीदीह गांव और सरकारी मिडिल स्कूल में तीन स्थानों पर स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए। कुल 110 महिलाओं और बच्चों की मौखिक रोगों, दांतों की सड़न, रक्तचाप, रक्त शर्करा और शारीरिक माप संबंधी जांच की गई। मासिक धर्म स्वच्छता, रोगवाहक जनित रोगों, साफ-सफाई और पोषण पर जागरूकता वार्ता भी आयोजित की गई। चतुर्थ दिवस को - दिनांक 20/09/2025 (शनिवार) चिल्डाग गांव के सिमर टोला में, 106 प्रतिभागियों की मौखिक स्वास्थ्य जांच की गई, 48 का रक्त शर्करा परीक्षण किया गया, 96 का रक्तचाप परीक्षण किया गया और 117 प्रतिभागियों के शारीरिक माप किए गए।



संस्थान की गतिविधियां

● “संस्थान में आईसीएमआर-शाईन इनिशिएटिव 2025 का आयोजन”

संस्थान के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय रहा कि आईसीएमआर-शाईन इनिशिएटिव के तहत दिनांक 8 अगस्त 2025 को संस्थान परिसर में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य नई पीढ़ी के नवोदित बच्चों के बाल मन में विज्ञान के प्रति रुचि और उत्साह जागृत करते हुए उन्हें प्रश्न पूछने और उनके मन में नवाचार की सोच को प्रोत्साहित करना था।

कार्यक्रम में सचिव एवं महानिदेशक, डीएचआर एवं आईसीएमआर डॉ. राजीव बहल, श्रीमती मनीषा सक्सेना, वरिष्ठ महानिदेशक, आईसीएमआर की गरिमामयी उपस्थिति रही। इसके साथ ही कार्यक्रम को सुशोभित करने हेतु नवोदित बच्चों के भविष्य निर्माता अर्थात डॉ. अतुल कुमार, प्रधानाचार्य एवं संस्थान के निदेशक महोदय भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में विज्ञान की दिशा में अग्रणी रहे आईसीएमआर के वैज्ञानिकों से राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय के स्कूली बच्चों को परिचित करवाया गया। उन्हें अनुसंधान में किए जा रहे विभिन्न अनुसंधान संबंधी प्रयासों के बारे में बताते हुए विभिन्न रोगों पर उनके द्वारा किए जा रहे अनुसंधानों के संबंध में उनके भीतर जागरूकता उत्पन्न करने का अनूठा कार्य किया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना शर्मा, उपनिदेशक (रा.भा.), आईसीएमआर द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम आईसीएमआर-एनआईएमआर के क्रियाकलापों की जानकारी लघु वीडियो स्क्रीनिंग द्वारा दी गई। इसके साथ ही,



दो अन्य वीडियो: द लास्ट माईल: इंडिया मिशन टू एलिमिनेट टीबी एवं आईसीएमआर, आई ड्रॉन:होप फ्राम द स्काई का भी प्रदर्शन किया गया। इसके साथ ही सभी छात्रों को टीमों में विभाजित करके गाईडिड टूर करवाया गया और प्रदर्शनियों एवं प्रयोगशालाओं के साथ ही प्रयोगशालाओं का दौरा भी करवाया गया, ताकि वे संस्थान के अनुसंधान क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें। यहीं नहीं मीट आवर साईटिस्ट की श्रृंखला के अंतर्गत डॉ. के सी पाण्डे, डॉ. रजनीकांत दिक्षित, डॉ. हिम्मत सिंह और डॉ. पियूष कुमार सिंह से भी छात्रों को चर्चा/प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी छात्रों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रमाणपत्र वितरित किए गए।



संस्थान की गतिविधियां

• “संस्थान में राष्ट्रीय खेल दिवस”

खेल विभाग, युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के अनुदेशों का अनुपालन करते हुए एनआईएमआर, दिल्ली परिसर में खेलों की एक श्रृंखला आयोजित की गई। राष्ट्रीय खेल दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती को चिह्नित करने के लिए मनाया जाता है। यह दिवस हम सभी के लिए एथलीटों के योगदान, दृढ संकल्प और असाधारण उपलब्धियों और समाज को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को समर्पित है। वर्ष 2019 में राष्ट्रीय खेल दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा फिट इंडिया मिशन का भव्य शुभारंभ हुआ, जिसने देश में खेल और फिटनेस की संस्कृति को विकसित करने के लिए बड़े आंदोलन का नेतृत्व किया है। राष्ट्रीय खेल दिवस देशभर में खेलों और शारीरिक गतिविधियों के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाता है। इसके साथ ही यह दिवस युवाओं को स्वस्थ जीवन शैली अपनाने और नियमित रूप से खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है।

राष्ट्रीय खेल दिवस 2025 का विषय “शांतिपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए खेल” था, जो यह दर्शाता है कि खेल विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को जोड़ने, दीवारें तोड़ने और सामंजस्य लाने की शक्ति रखते हैं। राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर संस्थान परिसर में दिनांक 28 से 29 अगस्त 2025 तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया और सभी प्रतिभागियों को इस अवसर पर टी-शर्ट वितरित की गई।



दिनांक 28 अगस्त 2025 को संस्थान के प्लाजा हाल में निदेशक महोदय की उपस्थिति में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् बालीवाल, लेमन और स्पून दौड़, म्यूजिकल चेयर, बेडमिंटन, सैक रेस और टेबल टेनिस (सिंगल/डबल) जैसी रोचक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसी क्रम में दिनांक 29 अगस्त 2025 को 100 मीटर की दौड़, टग ऑफ वार, चैस, क्रिकेट, बॉलीवाल, आदि खेलों का आयोजन किया गया। संबंधित सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया। उल्लेखित खेलों में विजेता प्रतिभागियों को दिनांक 29 अगस्त 2025 को पुरस्कृत किया गया।



खेल दिवस के उपलक्ष में आयोजित गतिविधियों की झलकियां

संस्थान की गतिविधियां

• सतर्कता दिवस

सतर्कता जागरूकता सप्ताह भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई में केंद्रीय सतर्कता आयोग की एक अहम पहल है। इस सप्ताह का उद्देश्य शासन और लोक प्रशासन में पारदर्शिता और नैतिकता के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाना है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह प्रत्येक वर्ष भारत रत्न सरदार बल्लभभाई पटेल के जन्म दिन के अवसर पर मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में संस्थान परिसर में दिनांक 27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम दिनांक 27.10.2025 को अपराह्न 3 बजे शपथ ग्रहण समारोह (हाईब्राड मोड में) आयोजित किया गया। इसके पश्चात् दिनांक 28.10.2025 को पूर्वाह्न 11 बजे से संस्थान परिसर में सतर्कता के विषय में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से वाल्काथोन आयोजित की गई। इसी क्रम में दिनांक 29.10.2025 को पूर्वाह्न 11 बजे सतर्कता विषय पर अतिथि व्याख्यान निदेशक, सीबीसी द्वारा आयोजित किया गया। जिसका विषय "मुख्य सतर्कता अधिनियम और प्रक्रियाएं - पारदर्शिता और नैतिक आचरण को बढ़ावा देने के उपाय" था।

इस ज्ञानवर्धक सत्र में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इन गतिविधियों के क्रम में अनेक रोचक प्रतियोगिताओं, निबंध प्रतियोगिता (द्विभाषी) और पोस्टर मेकिंग एवं क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। दिनांक 01.11.2025 को स्कूल एवं कॉलेज में जागरूकता सभाओं का भी आयोजन किया गया। दिनांक 03 नवंबर 2025 को संस्थान के सभागार



कक्षा में उल्लेखित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए।

स्वरचित उत्कृष्ट स्लोगन प्रतियोगिता

“हिंदी को बनाए जन-जन की भाषा, गर्व और एकता की परिभाषा।
हिंदी को कार्य में अपनाएं, राष्ट्रभक्ति दिखाकर देश की सेवा में हाथ बढ़ाएं।
राजभाषा हिंदी का करके सम्मान, राष्ट्र का होगा उत्थान”॥

डॉ. अनुप्रिया मिन्हास

“राष्ट्र सत्कार तभी होगा, जब अपनी मातृभाषा का प्रचार होगा।
जब हिंदी को अपनायेंगे, तभी खुद का असल मान पाएंगे॥

सुश्री रिशु शर्मा

“विविधताओं से भरे भारतवर्ष में, लगी भाषाओं की फुलवारी है।
इनमें सबसे प्यारी, हिंदी राजभाषा हमारी है”॥

सुश्री श्वेता

∞

जुलाई-दिसम्बर 2025 के दौरान संस्थान के सेवा-निवृत्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान को जीवन-पर्यन्त अपनी सेवाएं प्रदान करने के बाद पूरे सम्मान के साथ सेवा-निवृत्ति प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को संस्थान परिवार की ओर से हार्दिक धन्यवाद देकर उक्त उक्त नहीं हो सकते वरन् अपनी मेहनत, निष्ठा से संस्थान को विकास एवं प्रगति की ओर अग्रसर करने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करने हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उनके स्वस्थ रहने की शुभकामनाएं करते हैं। संस्थान से सेवा-निवृत्त होने वाले कर्मचारियों के नाम निम्न प्रकार हैं:-

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	सेवा-निवृत्ति की दिनांक
1	श्री प्रशांत मिश्रा	कीट संग्राहक	31.07.2025
2	श्रीमती वी. मलिंगा	एलए-1	31.07.2025
3	श्री अतर पाल	सफाई कर्मचारी	31.07.2025
4	श्री बेलम सिंह	अटेडेंट सर्विसिज	31.07.2025
5	श्री डोमिनिक मन्नुवल सेबास्टिओ	क्षेत्रीय परिचर	31.08.2025
6	श्री के आर दास	एफ एल ए	31.08.2025
7	श्री दिनेश चन्द्र	अनुसंधान सहायक	30.09.2025
8	श्री रामेश्वर	चौकीदार	30.09.2025
9	श्री ए जी मलिक	एफ एल एल	30.09.2025
10	श्री एम के जयस्वाल	प्रयोगशाला तकनीशियन	30.09.2025
11	श्री रघुवेन्द्र कुमार शर्मा	प्रयोगशाला सहायक	31.10.2025
12	श्री महालु गोविंद गवास	क्षेत्रीय परिचर	31.10.2025
13	श्री देवदत्त	एलए-2	30.11.2025
14	श्री राज महेन्द्र	अटेडेंट सर्विसिज	31.12.2025
15	श्री रसिक लाल दास	एलए-2	31.12.2025
16	श्री उदयवीर सिंह	फील्ड वर्कर	31.12.2025
17	श्री प्रताप भिकु जालमी	चपरासी	31.12.2025

∞

जुलाई-दिसम्बर 2025 के दौरान संस्थान के नवनियुक्त वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी

आईसीएमआर-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान के विकास सोपानों के दौरान कई अधिकारी/कर्मचारी सेवा-निवृत्त होते हुए इसकी बागडोर नव-नियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों को सौंपते गए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों के आगमन पर संस्थान परिवार उनका हार्दिक स्वागत करता है। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि संस्थान के निम्नलिखित वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी अपने बौद्धिक ज्ञान, प्रतिभा, मेहनत एवं निष्ठा से संस्थान को उन्नति की ओर अग्रसर करने में अपना उल्लेखनीय योगदान प्रदान करेंगे।

क्र.सं.	वैज्ञानिक/अधिकारी/कर्मचारी का नाम	पदनाम	संस्थान में कार्य ग्रहण करने की दिनांक
1.	श्री संदीप प्रजापति	प्रवर श्रेणी लिपिक	06.08.2025
2	श्री परमानंद शर्मा	अवर श्रेणी लिपिक	04.08.2025
3	श्री बलवीर भाटी	अवर श्रेणी लिपिक	11.08.2025
4	श्री प्रियांशु	अवर श्रेणी लिपिक	12.08.2025
5	श्रीमती वंदना कालिया	प्रशासन अधिकारी	28.08.2025
6	श्री दीपक	तकनीकी सहायक	17.09.2025
7	सुश्री तान्या सुयाल	तकनीशियन	17.11.2025
8	श्री अजय सिंह सोलंकी	लेखा अधिकारी	01.12.2025
9	श्री अभिनव लखेडा	प्रवर श्रेणी लिपिक	15.12.2025
10	डॉ. प्रिया रानी	वैज्ञानिक-बी	24.11.2025

∞